International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue 3 || March. 2017 || PP 103-105

मत्स्य क्षेत्र के प्रमुख साहित्यकार

डॉ. वीरेन्द्र कुमार जोशी
व्याख्याता संस्कृत
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय
अलवर

राजस्थान एकीकरण के समय 18 मार्च 1948 को अलवर , भरतपुर , करौली और धौलपुर को मिलाकर मत्स्य संघ की स्थापना की गई । अलवर के गांधी बाबू शोभाराम मत्स्यसंघ के प्रथम प्रधानमंत्री बने । ऐतिहासिक दृष्टि से राजा मत्स्य या मत्सिल द्वारा स्थापित राज्य मत्स्य जनपद कहलाया। ऐतरेय ब्राह्मण में प्रमुख जनपदों के साथ मत्स्य क्षेत्र का भी उल्लेख है दृ

काशी कौशल्येषु शाल्व मत्स्येषु सवस उशीनरेषु ।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार हवसन द्वैतवन मत्स्यदेश का प्रतापी सम्राट था। जिसने अश्वमेध यज्ञ किया।

मनुस्मृति में मत्स्य जनपद को ब्रह्मावर्त का प्रमुख भाग बताया गया है ।

रामायण में कैकेय से अयोध्या जाते समय मत्स्यों का वर्णन मिलता है। महाभारत के अनुसार– पाण्डवों को अज्ञातवास काल में मत्स्य राजा ने ही शरण दी थी ।

बौद्धग्रन्थ 'अंगतुर निकाम' में वर्णित 16 महाजनपदों में मत्स्य जनपद पंचाल एवं शूरसेन के मध्य स्थित है ।

मौर्यकाल में– विराटनगर से प्राप्त अभिलेख इसके अस्तित्व को सिद्ध करते हैं।

जनरल कनिंघम ने– अलवर की पहाड़ियों से लेकर यमुनातट की पवित्र भूमि को मत्स्य क्षेत्र कहा है ।

महाराज जयसिंह की विद्वता एवं गुणग्राहकता से प्रभावित होकर अनेक विद्वान् , कलामर्मज्ञ अलवर आए थे। इनमें प्रमुख हैं – स्वामी विवेकानन्द , आचार्य रामचन्द्र शुक्ल , कविवर गंगेश , योगीलाल , मुरलीधर भट्ट , हरिनाथ, भट्ट, पूरणमल, जगन्नाथ जोशी, चन्द्रशेखर वाजपेयी, श्री कृष्ण जयदेव, कन्हैया सप्ततीर्थ, रामचन्द्र भट्ट, पं० पीताम्बर झा, शिवदत्त शर्मा, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, द्यावाचस्पति पं० प्रभुदत्तशास्त्री, महामहोपाध्याय गिरधारी शर्मा भट्ट, पं० पिनाकी माल, सीताराम शास्त्री आदि ।

योगीराज महाराज भर्तृहरि ने उज्जैन से आकर यहाँ घोर तपस्या की ।

मध्यकाल में इस क्षेत्र में सन्त लालदास , चरणदास , सहजोबाई , आबाई , करमाबाई , सन्त गरीबनाथ , सन्त दुर्बलनाथ जैसे सन्तों की वाणी गूंजी । आज भी इनके आश्रम व साहित्य इसके प्रमाण हैं ।

इस जनपद का वैदिक काल से लेकर 18वीं शती तक का विपुल वाङ्गमय आज भी विभिन्न पुस्तकालयों, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानों में सुरक्षित है। वर्तमान में पाण्डुलिपियों पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोधकार्य किया जा रहा है ।

मत्स्य क्षेत्र की उर्वरा भूमि अनेक साहित्यकारों की जन्म – स्थली रही है , जिन के विषय में चर्चा करना ही इस शोध पत्र का प्रमुख विषय है ।

श्री रघुवीर स्वरूप भट्ट

महाकवि श्री रघुवीर स्वरूप भट्ट का जन्म 1919 को अलवर में हुआ । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अलवर में और उच्च शिक्षा महाराजा संस्कृत कॉलेज जयपुर से प्राप्त की । आप अध्यापक के पद पर भी रहे । महाकवि की प्रमुख रचनाएं हैं –

1 कालिकाष्टकम –

इसमें शक्ति स्वरूपा महाकाली की स्तुति है –

मासर्पदाम्ना समावद्धवेसां गले मुण्डमालां विराजत्सुवेशाम्।
फणीशै समावृत्तसर्वाङ्ग देशां समालंकृतां कालिकां भाववेऽहम् ॥

2 – जगदम्बाष्टकम –

इसमें महाकवि ने अपने कल्याण एवं दया के लिए मां जगदम्बा का स्तवन किया है –

बालिशं मत्वा दयां विदेहि त्वमङ्के जननि तुर्णमाधेहि ।
त्वदृते न ह्यन्यच्छरणं भवाब्धौ पोतं त्वच्चरणम् ॥

3 – शिवाष्टकम –

महाकवि की यह रचना भगवान शिव की स्तुति में भुजंगप्रयात छन्द में रचित है –

जटाजूटकाविर्भवच्छुभ्रगाङ्गं समासक्त बालेन्दुलेखोत्तमाङ्गम् ।
चिताभस्मलिप्तं भुजगैर्वृताङ्ग सदानन्दरूप भव भावयेऽहम् ॥

4 – भैरवाष्टकम –

इसमें महाकवि ने भैरव की स्तुति की है ।

5 – संस्कृताध्ययनेहितम् –

इस रचना में महाकवि ने संस्कृत भाषा के अध्ययन की उपयोगिता पर चर्चा की है और कहा है कि हमारे प्राचीन संस्कृति और इतिहास को जानने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है –

भारते संस्कृतं यावज्जनैर्नैवावबुध्यते ।
तावत्ज्ञानं न सम्पूर्णभैक्तीहयस्य च संस्कृते ॥

6 – रामस्यवनगमनम् –

महाकवि की इस रचना में दशरथ पुत्र राम के वनगमन का कारुणिक प्रसंग वर्णित है ।

7 – हरिद्रोपत्यका –

महाकवि की इस रचना में हल्दीघाटी का आलंकारिक वर्णन है । यहां महाराणा प्रताप और मुगल सेना के बीच ऐतिहासिक युद्ध हुआ था । इस पवित्र भूमि हल्दीघाटी की मिट्टी हम सभी के द्वारा सदैव शिरोधार्य है –

इयं देशभक्तेः पुनीता स्थली सा ,
हरिद्रा समा मृत्तिका यत्र कीर्णा ।
इदं पावनं तीर्थमस्माकमस्ति ,
मृदं मस्तकेऽस्याः सदा संघरेम ।।

2 – पं. प्रभुदयाल

पं. प्रभु दयाल का जन्म अलवर जिले के गढ़ी ग्राम में 1914 में हुआ । महाकवि पं. प्रभु दयाल व्याकरण , ज्योतिष , साहित्य और कर्मकाण्ड के ज्ञाता थे । इनकी दो रचनाएं हैं –

1 – तालवृक्षमहात्म्यम्

महाकवि की इस कृति में ताल वृक्ष के प्राकृतिक सौन्दर्य का आलंकारिक शैली में वर्णन है –

अथ तालवृक्षमहात्म लिख्यते ।
ब्रह्मोवाच । पुराकृत युगेस्या ।
दौमण्डव्यो सुमहातपः
चचारपृथ्वीशीर्षा महस्तपाचिकीर्षया ?

(2) मामोड़महात्म्यम् – महाकवि पं० प्रभुदयाल ने 34 श्लोकात्मक इस कृति में मामोड़ स्थान का वर्णन किया है ।

3 – तैलङ्ग भट्ट कविकिंकर गिरिधारी शर्मा

महाकवि तैलंग भट्ट का जन्म 895 में अलवर में हुआ । महाकवि को अलवरेन्द्र जयसिंह तथा झालावाड़ नरेश भवानी सिंह का संरक्षण प्राप्त था । महाकवि की भगवान श्रीकृष्ण में अनन्य निष्ठा थी । महाकवि की रचना गोविंदगीति में श्री कृष्ण के शैशव से किशोरावस्था तक की लीलाओं एवं महात्म्य का स्तवन है । महाकवि ने अपनी कृति सरस्वती सन्देश के पूर्व भाग में सुरभारती (सरस्वती) की दशा का विशद् चित्रण किया है और उत्तर भाग में अपने आश्रय दाता विद्यानुरागी महाराज भवानी सिंह के पांडित्य , विद्वता , गुणज्ञता , संरक्षण आदि का गुणगान किया है । महाकवि ने अपनी अन्य रचना अलवरेन्द्रकीर्तिलता में अलवर राज्य की वंश परंपरा , तत्कालीन शासक अलवरेन्द्र जयसिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्णन किया है । श्रृंगारलहरी , वेदनावेदनगीति , सूक्ती मुक्तावली महाकवि के अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं ।

4– पं. श्रीकृष्णदत्त शास्त्री

महाकवि का जन्म तिजारा में सन् 1900 में हुआ था ।

पं. श्रीकृष्णदत्त शास्त्री को विद्या भास्कर और कवि रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया । आपने हिन्दी साहित्य के साथ–साथ संस्कृत साहित्य का भी परिवर्धन किया । आपकी संस्कृत रचनाओं में ध्रुवचरित्र महाकाव्य , मयूरदत्त नीतिशतकम् , अस्मदीयचरितम , भक्ति वाहिनी और हिन्दी काव्यों में कीचकवध ,पद्य पंचाशिका दोहावली प्रमुख हैं ।

5 – पं . विष्णुदत्त शास्त्री

राजगढ़ निवासी पं. विष्णुदत्त शास्त्री की प्रमुख रचनाओं में उत्सव विलास ,ऋतु विलास , सदाशिव चरित्रामृत और मंगलशतकम् हैं । मंगलशतकम् में श्री युवराज प्रताप के विवाह के अवसर पर युवराज और युवराज्ञी की युगल जोड़ी के लिए आयु , आरोग्य , ऐश्वर्य और समृद्धि की कामना की गई है –

जबलौ भारत भूमि ये, जबलौं उडु रवि चन्द ।
वर दुलहिन तबलौं लहौ, नितनव मोद अनन्द ॥

उत्कृष्ट साहित्य लेखन के लिए राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा पं .विष्णु दत्त शास्त्री जी को सम्मानित भी किया गया ।

9 – पं. रामचन्द्र भट्ट

पं. रामचन्द्र भट्ट की रचना आत्मदर्शन नामक दार्शनिक ग्रन्थ है , जिसे आप के सुपुत्र डॉ. गंगाधर भट्ट ने रामचन्द्रवाग्विलास नाम से प्रकाशित और सम्पादित किया है ।

10 – डॉ. चन्द्रकिशोर गोस्वामी

महाकवि का जन्म भरतपुर में 1938 में हुआ । डॉ. चन्द्रकिशोर गोस्वामी काव्यशास्त्र , दर्शन , व्याकरण के विद्वान थे । महाकवि वनस्थली विद्यापीठ में संस्कृत विभागाध्यक्ष पद पर भी रहे ।महाकवि को राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा श्रेष्ठ गद्य लेखन के लिए अम्बिकादत्त व्यास पुरस्कार भी प्रदान किया गया । आपकी रचनाओं में भावनिर्झरी , साहित्यशास्त्रालोक और हिन्दी कविता संग्रह प्रमुख हैं , जिनमें भक्ति , प्रेम , स्वतंत्रता , लोकजीवन आदि का काव्यात्मक वर्णन है ।

11– पं. सम्पूर्णदत्त मिश्र " कवि पुंडरीक "

महाकवि हिन्दी , अंग्रेजी और उर्दू के विद्वान थे । आपको कविपुंडरीक की उपाधि भी मिली । आपकी रचना ऋतूल्लास में षड् ऋतुओं का वर्णन है । अन्य रचना प्रावृट् पृषन्ति में हिंदी के 11 गीतों का संग्रह है , रासनायकनायिकम् राधा और कृष्ण का स्तुतिपरक स्तोत्र काव्य है । श्रीरेवेश्वररंजना त्रिभुवसुन्दरी , नर्मदा और भगवान महादेव के मनोरंजन निमित्त रचना है । सूक्ति पंचामृतम् में दूध , दही , घी , मधु और शर्करा का अमृत रूप में वर्णन है।

12 – श्रीहरीकृष्ण कमलेश

श्री हरीकृष्ण कमलेश का जन्म भरतपुर के डीग कस्बे में 1893 में हुआ । महाकवि हिन्दी , संस्कृत , बंगला उर्दू , अंग्रेजी , गुजराती , मराठी , तमिल भाषाओं के ज्ञाता थे । महाकवि सिद्धहस्त वैद्य , बहुश्रुत विद्वान् और समाज सेवा की प्रवृत्ति के कारण अपने क्षेत्र में विशिष्ट सम्मानित थे । आपकी संस्कृत रचनाओं में गोविन्दगोवर्धनम् , श्रीराधाबल्लभाष्टकम , ब्रजस्थलीवर्णनम् प्रमुख हैं । गोविन्दगोवर्धनम् में गिरिराज जी का साहित्यिक का वर्णन है –

वन्देऽहं व्रजगौरवं गिरिवरं सौन्दर्यरत्नाकरं
श्रीमद्गोकुलचन्द्रकेलिनिलयं वल्लीद्रुमालङ्कृतम्

नानारंगविहङ् गमरसालापैरचिन्त्यादभुतं यस्याभामवलोक्य लोकललनानृणां गिरो गद्गदा ॥

बन्दौं ब्रजगौरवगिरी सुखमा खान महान । ब्रजवल्लभ–क्रीड़ा–निलय खगमृगकेलिनिधान ॥

श्रीराधावल्लभाष्टकम् राधा श्रीकृष्ण जी की स्तुति परक मार्मिक काव्य है –

पीताम्बरं सुन्दरमद्हासं
दिग्भासयन्तं मुखचन्द्रकान्त्या ।
ब्रजाङ्गनारासरसालसाङ्गं
श्रीराधिकावल्लभमाश्रयामि

और बृजस्थलीवर्णनम् में महाकवि ने ब्रज के ग्वाले , गाएं , ब्रजभूमि , यमुना आदि का साहित्यिक वर्णन किया है । महाकवि ने ब्रज भाषा और हिन्दी में भी काव्य रचना की है ।

13 – डॉ. बैकुण्ठनाथ शास्त्री

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शास्त्री का जन्म करौली के ब्राह्मण परिवार में 1940 में हुआ । महाकवि ने उषा – अनिरुद्ध जैसे प्रख्यात पौराणिक प्रेमाख्यान पर प्रियमिलन शीर्षक से खण्डकाव्य लिखा है ।

14– पं. प्रभुदत्त शास्त्री

पंडित प्रभुदत्तशास्त्री का जन्म अलवर जिले के ततारपुर ग्राम में 1892 ई. में हुआ । आपकी रचनाओं में गणपति सम्भवमहाकाव्य कुमारसम्भव परम्परा में लिखा गया सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है । आपकी अन्य रचनाएं गीता व्यंगमंदाकिनी ,भारतविजयम् महाकाव्य , राष्ट्रध्वजवन्दनामृतम् ,राष्ट्रकाव्यामृतम् , श्री झांसीश्वरो शौर्यसौन्दर्यम् , श्री धन्वन्तरि जन्माऽमृतम् काव्यम् , संस्कृत वाग्विजय (भाषा विनोद नाटक) ,संस्कृतवाक्सौन्दर्याऽमृतम् , श्री शिव महिम्न स्तोत्र , दीपावली दीपक , ग्रंथिबंधनमीमांसा , शंकराचार्यपादुकावंदनम् हैं ।

अन्य विद्वानों में श्री बालमुकुंद शास्त्री जी , पं. सुखदेव शास्त्री , गणपति लाल शास्त्री , पं. दुर्गादत्त शास्त्री सुदर्शन शास्त्री , ज्ञानेश्वर शास्त्री , ठाकुर दुर्जन सिंह , पं. नंदकिशोर शास्त्री प्रमुख हैं । इन महाकवियों ने अपनी लेखनी से संस्कृत के साथ–साथ अन्य भाषाओं के काव्य को भी समृद्ध किया है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 – गणपति सम्भवम् – पं. प्रभुदत्त शास्त्री
2 – गणपतिसम्भवम् महाकाव्य : समीक्षात्मक अध्ययन –शोध ग्रन्थ – वीरेन्द्र कुमार जोशी
3 – संस्कृत – वाङ्मय का बृहद् इतिहास
प्रधान सम्पादक – पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय , सम्पादक प्रो. व्रज बिहारी चौबे
4 – संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
5 – संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी आचार्य
6 – प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति – डॉ. राजकिशोर सिंह एवं डॉ. उषा यादव
7– वैदिक संस्कृति और संस्कृत साहित्य का इतिहास – रामानुज तिवारी